Amire Ahle Sunnat Se Khushbu Ke Baare Mein Suwal Jawab (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 302
Weekly Booklet : 302

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ के मल्फ़ूज़ात का तहरीरी गुलदस्ता

अमीरे अहले सुन्नत से

ख़ुश्बू

के बारे में सुवाल जवाब

सफ़हात 17

- प्यारे आक़ा की पसन्दीदा ख़ुश्बूएं 02
- मग़रिब के बा'द इत्र लगाना कैसा ?03
- इत्र लगाइये मगर तक्लीफ़ न दीजिये 07
- आप को अत्तार क्यूं कहा जाता है ? 12

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **अमीरे अहले सुन्नत से ख़ुश्बू के बारे में सुवाल जवाब**

सिने त़बाअ़त : शव्वालुल मुकर्रम **1444** हि., मई **2023** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**अमीरे अहले सुन्नत से ख़ुश्बू के बारे में सुवाल जवाब**" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद -1, गुजरात।

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह रिसाला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से किये गए सुवालात और उन के जवाबात पर मुश्तमिल है।

अमीरे अहले सुन्नत से ख़ुश्बू के बारे में सुवाल जवाब

दुआए जा नशीने अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 15 सफ़्हात का रिसाला : **"अमीरे अहले सुन्नत से ख़ुश्बू के बारे में सुवाल जवाब"** पढ़ या सुन ले उस के ज़ाहिर के साथ साथ बातिन को भी मुअ़त्तर फ़रमा और उसे बे हिसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद न पढ़ने वाले के लिये हलाकत

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا सह़री के वक़्त कुछ सी रही थीं कि अचानक सूई गिर गई और चराग़ भी बुझ गया। इतने में नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए। चेह्‌रए अन्वर की रोशनी से सारा घर रोशन हो गया ह़त्ता कि सूई मिल गई। उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने अ़र्ज़ की : **"या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप का चेह्‌रए अन्वर कितना रोशन है।" आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस शख़्स के लिये हलाकत है जो मुझे क़ियामत के दिन न देख सकेगा।" अ़र्ज़ की : "वोह कौन है जो आप को न देख सकेगा।" फ़रमाया : "वोह बख़ील है।" पूछा : "बख़ील कौन ?" इर्शाद फ़रमाया : "اَلَّذِیۡ لَا یُصَلِّیۡ عَلَیَّ اِذۡ سَمِعَ بِاِسۡمِیۡ, जिस ने मेरा नाम सुना और मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा।" (القول البدیع، ص302)

सूज़ने गुमशुदा मिलती है तबस्सुम से तेरे

शाम को सुब्ह बनाता है उजाला तेरा

(ज़ौक़े ना'त, स. 16)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सुवाल : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पसन्दीदा ख़ुश्बू कौन सी थी ?

जवाब : मुश्क का तज़्किरा मिलता है कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह इस्ति'माल फ़रमाई है। (وسائل الوصول الی شمائل الرسول، ص87) अगर (आज कल) कोई येह ख़ुश्बू इस्ति'माल करना भी चाहे तो शायद अस्ल चीज़ मुश्किल से मिले क्यूं कि अब केमीकल की आमेज़िश बहुत ज़ियादा हो चुकी है, अस्ल चीज़ का मिलना दुश्वार है। (अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के क़रीब बैठे हुए मुफ़्ती साहिब ने फ़रमाया :) नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो ख़ुश्बूएं इस्ति'माल फ़रमाते थे उन में ऊ़द, मुश्क और ज़ा'फ़रान का ज़िक्र मौजूद है। (مسلم، ص953، حدیث:5884، وسائل الوصول، ص87۔ ابو داود، 4/117، حدیث:4210) नीज़ प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरत में येह भी मिलता है कि आप को मुश्क और ऊ़द पसन्द थी।

(السیرۃ الحلبیہ، 3/480) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 5/237)

सुवाल : क्या अलकुह़ल (Alcohol) वाले परफ़्यूम (Perfume) इस्ति'माल कर सकते हैं ?

जवाब : अलकुह़ल वाला परफ़्यूम इस्ति'माल करने के ह़वाले से उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है। कुछ उ़लमा मन्अ़ फ़रमाते हैं कि "येह नापाक है और नहीं लगाना चाहिये।" हमारे "दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत" का मौक़िफ़ येह है कि "अलकुह़ल वाला परफ़्यूम पाक है, इसे लगाने में कोई ह़रज नहीं है और

इसे लगा कर नमाज़ पढ़ने में भी कोई ह़रज नहीं है।'' (फ़तावा अहले सुन्नत ग़ैर मत़्बूआ़, फ़तवा नम्बर : 1-4683) अलबत्ता जिस चीज़ में उ़लमा का इख़्तिलाफ़ हो उस से बचना बेहतर होता है। (फ़तावा रज़विय्या, 3/251) अगर कोई अलकुह़ल वाले परफ़्यूम से बचता है तो अच्छा है, उस को बुरा भला न कहा जाए, येह तक़्वा है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/290)

सुवाल : क्या लड़कियां ख़ुश्बू लगा सकती हैं ?

जवाब : जो लड़की बालिग़ा है उस के लिये बेहतर येही है कि वोह घर की चार दीवारी में ''ऐसी ख़ुश्बू लगाए कि जिस का रंग तो ज़ाहिर हो मगर उस की ख़ुश्बू न फैले।''[1] और अगर ख़ुश्बू फैलती है मगर ना महरमों तक नहीं जाती तो भी ह़रज नहीं है। बहर ह़ाल अगर बालिग़ा घर में भी ख़ुश्बू लगाए तो उसे इस बात का ख़याल रखना है कि वोह ना मह़रम तक न पहुंचने पाए। (अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के क़रीब बैठे हुए मुफ़्ती साहिब ने फ़रमाया :) इसी त़रह़ वोह बच्चियां भी ख़ुश्बू लगाने में एह़तियात़ करें कि जो बालिग़ होने के क़रीब हैं। (अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इर्शाद फ़रमाया :) ऐसी लड़कियां जो बुलूग़त के क़रीब नहीं होतीं मगर उन का काफ़ी क़द काठ होता है और अगर येह ख़ुश्बू लगा कर निकलें तो मर्द उन की त़रफ़ कशिश खाएं तो इन का भी ख़ुश्बू लगा कर बाहर निकलने से बचना अच्छा है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/16)

सुवाल : मग़रिब के बा'द इ़त्र लगाना कैसा ? नीज़ क्या चार से पांच साल की उ़म्र के बच्चों को इ़त्र लगा सकते हैं ?

1... ह़दीसे पाक में है : मर्दों की ख़ुश्बू वोह है जिस में बू हो और रंग न हो और औ़रतों की ख़ुश्बू वोह है, जिस में रंग हो, बू न हो। (ابوداود، 4/68، حدیث:4048)

जवाब : मग़रिब के बा'द इत्र लगाया जा सकता है। दिन रात में कोई ऐसा वक़्त नहीं जिस में इत्र लगाना मन्अ़ हो। चार पांच साल की उ़म्र के बच्चों, बल्कि चार पांच दिन के बच्चों, यहां तक कि एक दिन के बच्चे को भी इत्र लगा सकते हैं। येह ग़लत, ग़लत और ग़लत अफ़्वाह है कि मग़रिब के बा'द ख़ुश्बू लगाने से या बच्चे को ख़ुश्बू लगाने से जिन्नात पकड़ लेते हैं या लिपट जाते हैं, ऐसा कुछ नहीं है। अगर ऐसा होता तो जिन्नात ख़ुश्बू की सारी दुकानें लूट लेते। मा'लूम नहीं उन को ख़ुश्बू पसन्द भी है या नहीं ? फ़िरिश्तों को तो ख़ुश्बू पसन्द है। (حاشیۃ السندی بشرح سنن النسائی للسیوطی، 7/61، تحت الحدیث:3939)

(अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के क़रीब बैठे हुए मुफ़्ती साहिब ने फ़रमाया :) ख़लीफ़ए मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द (मौलाना अह़मद मुक़द्दम रज़वी नूरी साहिब) का बयान है कि हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाया करते थे : बुरी और बदबूदार चीज़ों की वज्ह से जिन्नात चिमटते हैं, ख़ुश्बू वग़ैरा की वज्ह से नहीं चिमटते। मग़रिब के बा'द कुछ देर के लिये बच्चों और औ़रतों को बाहर निकलने से रोकने[1] की एक वज्ह येह भी है कि उन्हें या तो वोह दुआ़एं याद नहीं होतीं जो उन्हें ऐसी मख़्लूक़ से बचाएं, दूसरा उन के अन्दर पाकी का इतना एहतिमाम नहीं होता जिस की वज्ह से जिन्नात वग़ैरा चिमट जाने का ख़त़रा होता है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/289)

1... फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब रात का शुरूअ़ हिस्सा हो जाए या तुम शाम पाओ तो अपने बच्चों को रोक लो, क्यूं कि इस वक़्त शैत़ान फैलते हैं। फिर जब रात की एक घड़ी गुज़र जाए तो बच्चों को छोड़ दो और दरवाज़े बन्द कर दो और **अल्लाह** का नाम लो, क्यूं कि शैत़ान बन्द दरवाज़े को नहीं खोलता। (بخاری، 2/399، حدیث:3280) ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : शैत़ान से मुराद मूज़ी जिन्नात और मूज़ी इन्सान दोनों हैं। शाम के वक़्त ही बच्चों को इग़वा करने वाले ज़ियादा फिरते हैं। मज़ीद फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा जिन्नात व शयात़ीन का असर बच्चों पर ज़ियादा होता है इस लिये बच्चों को निकलने से रोका गया है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/85)

सुवाल : बा'ज़ इस्लामी भाई ऐन नमाज़ से पहले दूसरों को इत्र लगाना शुरूअ़ कर देते हैं, वोह इत्र कभी मुवाफ़िक़ होता है कभी नहीं होता, बा'ज़ अवक़ात इत्र की क्वॉलिटी में भी फ़र्क़ होता है इस ह़वाले से मदनी फूल अ़ता फ़रमा दीजिये ।

जवाब : येह अ़मल मशाइख़ के यहां देखा है, लोग लगा रहे होते हैं, इस में येही समझ आता है कि अगर इत्र मुवाफ़िक़ न हो तो ख़ुद मन्अ़ कर दे । मैं ने सय्यिदी क़ुत्बे मदीना मौलाना ज़ियाउद्दीन अह़मद क़ादिरी मदनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के यहां देखा है कि लोग इत्र लगा रहे होते । आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की वफ़ात के बा'द जा नशीने क़ुत्बे मदीना ह़ज़रत मौलाना ह़ाफ़िज़ फ़ज़्लुर्रह़मान क़ादिरी मदनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के यहां भी इत्र लगाते हुए देखा है जिस से येही मा'लूम होता है कि अक्सरिय्यत इत्र लगवाती है तो जिस को इत्र मुवाफ़िक़ न हो या वोह न लगवाना चाहे तो अपना हाथ खींच ले । (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/432)

सुवाल : क्या **अल्लाह** पाक के किसी वली के मज़ार पर अच्छी निय्यत के साथ ख़ुश्बू लगा सकते हैं ?

जवाब : मज़ार पर ख़ुश्बू लगाने का ह़ुक्म तो कहीं पढ़ा नहीं और न मुझे इस मस्अले का इ़ल्म है, अलबत्ता लोगों में येह बात राइज है । मज़ारात पर इत्र वग़ैरा छिड़क्ने के बजाए उस इत्र की रक़म मसलन 100 रुपै साह़िबे मज़ार के ईसाले सवाब की निय्यत से किसी ग़रीब को दे देंगे तो ज़ियादा बेहतर होगा, उस ग़रीब की दिलजूई भी होगी और साह़िबे मज़ार के लिये ईसाले सवाब का सिल्सिला भी हो जाएगा । ख़ुद ग़ौर कीजिये कि चादर चढ़ाने या इत्र छिड़क्ने से ज़ियादा फ़ाएदा होगा या इस त़रह़ ईसाले सवाब करने से ज़ियादा फ़ाएदा होगा । अलबत्ता मज़ार पर चादर चढ़ाना और फूल

रखना जाइज़ है। बहर हाल मज़ार शरीफ़ या उस की चादरों पर जो इत्र छिड़का जाता है उस से सिर्फ़ लम्हे भर के लिये ख़ुश्बू आती है फिर पता भी नहीं चलता कि यहां इत्र छिड़का गया था क्यूं कि चादर के ऊपर फूलों का अम्बार लगा हुवा होता है अगरबत्तियां अलग सुलग रही होती हैं जिस से इत्र की ख़ुश्बू मा'लूम नहीं हो पाती। फिर हर इत्र इतना पावरफ़ुल हो कि जिस की ख़ुश्बू बर क़रार रहे ज़रूरी नहीं बल्कि मज़ारात पर जो इत्र बिक रहे होते हैं उन की भी कोई ख़ास क्वॉलिटी नहीं होती। अगर वोह कोई ख़ास इत्र हो भी तो मज़ार की चादर पर छिड़क्ने का मस्अला मुझे मा'लूम नहीं है कि आया इस से ता'ज़ीम मक़्सूद होती है या क्या मुआ़मला होता है और इस त़रह़ इत्र छिड़क्ने से ता'ज़ीम हो सकती है या नहीं ?

इत्र छिड़क्ने में एह़तियात़ कीजिये

एक मरतबा जुलूसे मीलाद के मौक़अ़ पर किसी ने मुझ पर इत्र छिड़का जो उड़ कर मेरी आंख में आ गया, इस के बा'द बक़िय्या जुलूस में मुझ पर क्या गुज़री होगी येह हर समझदार शख़्स समझ सकता है। ख़ुदा जाने उस ने मेरी ता'ज़ीम के लिये ऐसा किया था या कुछ और निय्यत थी, न जाने वोह क्या सवाब ले कर गया होगा। ऐसे लोग ''छिड़कू'' होते हैं, उन की पार्टी सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर की जाली मुबारक के पास मौजूद ज़ाइरीन पर भी स्प्रे कर देती है, मैं ने ख़ुद उन को ऐसा करते देखा है। उन को इस का भी ख़याल नहीं होता कि कोई वहां सर झुकाए आंखें बन्द किये खड़ा है या तसव्वुर में कहीं पहुंचा हुवा है और उस ''छिड़कू पार्टी'' के लोग आ कर उस पर स्प्रे कर देते हैं, वोह ज़ाइर कहीं पहुंचा भी होगा तो वापस आ जाएगा और येह लोग समझते होंगे कि शायद हम ने ज़ाइरे रौज़ए अन्वर को मुअ़त्त़र कर के कोई बहुत बड़ा तीर मारा है।

इत्र लगाने में दूसरों का लिहाज़ कीजिये

मेरा तजरिबा है कि बा'ज़ ख़ुश्बूएं बा'ज़ लोगों को मुवाफ़िक़ नहीं आतीं, हज़ार क़िस्म की ख़ुश्बूएं होती हैं, बा'ज़ ख़ुश्बूएं बा'ज़ लोगों के लिये एलर्जी का बाइस भी बन जाती हैं कि वोह ख़ुश्बू सूंघते ही छींकें मारना शुरूअ़ कर देते हैं, जैसे ही वोह ख़ुश्बू उन के सर तक पहुंचती है उन का सर भी दर्द करना शुरूअ़ हो जाता है और वोह बेचारे अपना सर पकड़ कर बैठे रहते हैं। ख़ुश्बू लगाने वाला अपने ज़ो'म में उन को मुअ़त्तर करता है मगर वोह बेचारे आज़्माइश में आ जाते हैं। इसी वज्ह से हमारे यहां इत्र लोगों के हाथ पर लगाने का रवाज है मगर फिर भी सामने वाले से पूछ कर इत्र लगाया जाए। केमीकल वाली ख़ुश्बू भी होती है जो हाथ पर लगाई जाए तो खाल पर लगे हुए बाल उड़ा देती है। इस के इ़लावा येह भी देखा है कि लोग मस्जिद की दरी पर इत्र की शीशी छिड़क्ते हैं जिस की वज्ह से मस्जिद की दरी पर धब्बा आता और उस पर मैल जम जाता है। यूं आ़रिज़ी ख़ुश्बू की महक आए भी तो नतीजतन दरी ख़राब हो जाती है तो येह मस्जिद को फ़ाएदा होने के बजाए नुक़्सान ही हुवा। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/19)

सुवाल : ख़ुश्बू के लिये गुलाब का पानी छिड़क्ना कैसा है ?

जवाब : ख़ुश्बू ह़ासिल करने के लिये बा'ज़ लोग गुलाब का पानी छिड़क्ते हैं, मुझे इस से इख़्तिलाफ़ है क्यूं कि येह तजरिबे की बात है कि मह़फ़िलों में गुलाब का पानी छिड़क्ने वाले बसा अवक़ात मुंह पर छिड़क्ते हैं जिस से लोगों को राह़त नहीं, तक्लीफ़ होती है। वोह काम किया जाए कि जिस से किसी मुसल्मान को तक्लीफ़ न हो यहां तक कि अगर एक हज़ार (1000) अफ़राद को आप की ख़ुश्बू से मज़ा आ रहा है और एक कहता है कि मुझे

तक्लीफ़ हो रही है तो उसे येह नहीं कहा जाएगा कि तुम यहां से चले जाओ क्यूं कि सब को फ़ाएदा होता है और सिर्फ़ तुम्हें तक्लीफ़ होती है बल्कि अगर नव सो निनानवे (999) अफ़्राद को फ़ाएदा पहुंचाने में एक को तक्लीफ़ पहुंचती हो तो फिर उस एक को तक्लीफ़ से बचाने के लिये उसी की रिआ़यत करेंगे और बक़िय्या सब को इस हलकी फुलकी राह़त से मह़रूम करना पड़ेगा। देखिये ! बन्दा रात दिन तो ख़ुश्बूओं में डुब्कियां नहीं लगा रहा होता कि ख़ुश्बू के बिग़ैर न रह पाए और अब इस को जो मुफ़्त की ख़ुश्बू आ रही है उसे आने दिया जाए, भले दूसरे मुसल्मान को इस से तक्लीफ़ हो रही हो। याद रखिये ! मुसल्मान को तक्लीफ़ पहुंचाने के भी शर्ई अह़काम हैं और अगर किसी को वाक़ेई अज़िय्यत पहुंचाई गई हो तो इस का हुक्म गुनाहे कबीरा तक जा पहुंचता है।

इत्र लगाते हुए अपनी त़रह़ दूसरों का भी ख़याल कीजिये

जब बन्दा अपने आप को इत्र लगाता है तो हाथ पर थोड़ी सी लगाता है, अपने कपड़ों का भी ख़याल रखता है और अगर सफ़ेद कपड़े हों तो येह भी देखता है कि इत्र लगाने से उन पर धब्बा तो नहीं पड़ जाएगा यहां तक कि धब्बे से बचने के लिये बे रंग इत्र इस्ति'माल करता है। जब इत्र इस्ति'माल करते हुए अपने लिये इतनी एह़तियातें बरती जाती हैं तो फिर अ़वाम का ख़याल क्यूं नहीं रखा जाता ? इसी त़रह़ मैं ने किसी को अपने ऊपर इत्र की पूरी शीशी छिड़क्ते नहीं देखा तो फिर दूसरों पर क्यूं छिड़की जाती है ?

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/22)

सुवाल : जुमुआ़ और ईदैन के दिन मसाजिद में बा'ज़ लोग ख़ुश्बू का छिड़काव करते हैं और जहां से गुज़रते हैं लोग उन्हें रक़म देते हैं, कोई 10 रुपै देता है तो कोई 20 रुपै तो कोई 50 रुपै देता है इस का शर्ई हुक्म क्या है ?

www.dawateislami.net

जवाब : येह नई बात सुनी है कि ऐसा भी हो रहा है। बहर ह़ाल येह छिड़काव करने वाला रक़म ले या न ले, इस त़रह़ सब पर ख़ुश्बू छिड़क्ना दुरुस्त नहीं है क्यूं कि हो सकता है किसी को उस से एलर्जी हो और वोह इस से तक्लीफ़ महसूस करे, फिर इस त़रह छिड़क्ने में परफ़्यूम का क़त़रा किसी की आंख में चला गया तो वोह आज़्माइश में आ जाएगा। रही बात रक़म देने की तो अगर कोई उस के मुत़ालबे के बिग़ैर अपनी ख़ुशी से रक़म दे दे तो कोई ह़रज नहीं और अगर येह त़ै है कि ख़ुश्बू छिड़क्ने वाले को रक़म देनी होगी, न देने पर येह बुरा भला कहेगा येह दुरुस्त नहीं और त़ा'नो तश्नीअ़ से बचने के लिये कुछ रक़म दी तो येह रिश्वत होगी, इस में अगर्चे देने वाला तो गुनाहगार नहीं होगा कि उस ने शर से बचने के लिये रिश्वत दी है लेकिन लेने वाला ज़रूर गुनाहगार होगा। येह छिड़काव करने का रवाज ख़त्म होना चाहिये। याद रखिये ! किसी भी इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त या जल्सों में इस त़रह़ ख़ुश्बू का छिड़काव लोगों की तक्लीफ़ का बाइ़स होता है। हो सकता है जो ऐसा करते हैं वोह इस को सवाब समझते हों। फिर फ़ज़ा में छिड़काव करना अलग है और किसी बन्दे पर छिड़क देना अलग, लेकिन जब फ़ज़ा में छिड़काव करें उस वक़्त भी येही ख़याल रखें कि लोगों पे आ कर न गिरे। बहर ह़ाल बेहतर येही है कि इस के इ़लावा बहुत सारे करने वाले काम हैं वोह किये जाएं, इस में वक़्त ज़ाएअ़ न किया जाए। करने वाले काम करो वरना न करने वाले कामों में जा पड़ोगे।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/431)

सुवाल : अक्सर Customer (गाहक) पूछते हैं कि येह ख़ुश्बू कितनी देर रहती है ? तो येह कहना कैसा कि "10 या 12 घन्टे रहती है।"

जवाब : बा'ज़ लोग ख़ुश्बू के बारे में यहां तक मुबालग़ा करते हैं कि "कपड़े धो लोगे तब भी ख़ुश्बू नहीं जाएगी।" बहर ह़ाल ! अगर Confirm (यक़ीनी) पता हो कि येह ख़ुश्बू इतनी देर रहती है तो फिर बता दें। मैं इस फ़ील्ड से काफ़ी वाबस्ता रहा हूं। दर अस्ल ख़ुश्बू की Fix Timing (मुक़र्रर वक़्त) बताना बहुत दुश्वार होता है, क्यूं कि गरमी में धूप की वज्ह से ख़ुश्बू जल्दी उड़ जाती है, जब कि सर्दी में चूंकि धूप में तेज़ी कम होती है, इस लिये ख़ुश्बू कम उड़ती है। अगर ख़ुश्बू को चूल्हे पर रख दो तो मा'लूम हो जाएगा कि उस का नाम क्या है ? क्यूं कि ख़ुश्बू, जलने से उड़ेगी। आ़म तौ़र पर ख़ुश्बूएं उड़ जाती हैं, क्यूं कि उन में Lasting या'नी ठहराव कम होता है। अलबत्ता बा'ज़ ख़ुश्बूएं ऐसी हैं जिन में Lasting ज़ियादा होती है, उन में से एक "सन्दल" भी है। बा'ज़ ख़ुश्बूओं में सन्दल मिलाई जाती है, ताकि उन की Lasting बढ़े, जैसे गुलाब में Lasting बहुत कम होती है, बहुत जल्दी उड़ जाता है, इस लिये इस में सन्दल मिला कर कुछ देर रखा जाता है, ताकि येह दोनों एक दूसरे को जज़्ब कर लें, फिर इस की Lasting बढ़ जाती है। बा'ज़ ख़ुश्बूएं ज़मीन में दफ़्ना दी जाती हैं, इसी त़रह़ बा'ज़ ख़ुश्बूओं को मिला कर उन का मह़लूल और Compound (मज्मूआ़) बनाया जाता है और उसे कुछ दिन के लिये रख दिया जाता है, तब जा कर वोह तय्यार और इस्ति'माल के क़ाबिल होती हैं। अब तो तक़रीबन ख़ुश्बूएं केमीकल से तय्यार होती हैं, अस्ली ख़ुश्बूएं अब नायाब हैं, अगर कोई कहेगा भी कि "येह अस्ली ख़ुश्बू है" तो ए'तिमाद नहीं होगा। **अल्लाह** बेहतर जाने। बा'ज़ ख़ुश्बू बेचने वाले लिख देते हैं कि "येह Super Quality (उ़म्दा मे'यार) की है" ह़ालां कि उस ख़ुश्बू की कोई क़ीमत नहीं

होती और वोह दो टके की ख़ुश्बू होती है। येह लोग बस अन्धी चलाते हैं। हर शख़्स को Super Quality का मत़लब भी पता नहीं होता। न जाने येह लोग ऐसा क्यूं लिखते हैं! इस त़रह़ येह अपनी आख़िरत दाव पर लगा रहे होते हैं और इस लिखे हुए को क़ियामत के लिये अपने ख़िलाफ़ गवाह बना रहे होते हैं। जो Super Quality लिखते हैं वोह अपने Super में ग़ौर कर लें कि अगर वोह घटिया है तो फिर Super लिखना झूट होगा, क्यूं कि आप ने धोका देने के लिये Super लिखा है। फिर बा'ज़ लोग अपनी ख़ुश्बूओं के त़रह़ त़रह़ के नाम भी रख देते हैं, ऐसा नहीं करना चाहिये। जैसी भी चीज़ हो, मिट्टी हो या सोना हो, आप बता दें। अगर पूछे कि "कितनी देर ख़ुश्बू रहेगी?" तो अगर आप को Confirm (यक़ीनी) पता हो या ख़ुद तजरिबा किया हो तो बता दें कि "अन्दाज़न इतने घन्टे ख़ुश्बू रहेगी।" बा'ज़ अवक़ात कम्पनी बदलने से भी ख़ुश्बू की Quality बदल जाती है। ऐसा भी होता है कि आप ने एक बार कोई Compound (मज्मूआ़) बनाया, उसी फ़ॉर्मूले से जब आप दोबारा Compound बनाएंगे तो कुछ न कुछ फ़र्क़ पड़ जाएगा। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/333)

सुवाल : अक्सर लोग येह कहते हैं कि रोज़े की ह़ालत में ख़ुश्बू नहीं लगा सकते, इस बारे में राहनुमाई फ़रमा दीजिये।

जवाब : अक्सर लोग तो येह बात नहीं कहते, कोई कोई कहता है! बहर ह़ाल रोज़े में ख़ुश्बू लगाने में कोई ह़रज नहीं है।

(फ़तावा अम्जदिय्या, 1/398) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/384)

सुवाल : इ़त्र बेचने वाले इ़त्र चेक करवाने के लिये इ़त्र की शीशी से कई कई लोगों के हाथों पर इ़त्र लगाते हैं तो इस त़रह़ उस में से कुछ इ़त्र कम भी

हो जाता है तो क्या इस त़रह़ कुछ कम वज़्न वाली शीशी को पूरा वज़्न बता कर बेचना दुरुस्त है ?

जवाब : इस त़रह़ का उ़र्फ़ तो है कि इ़त्र बेचने वाले वज़्न का कह कर नहीं देते बल्कि इस त़रह़ बेचते हैं कि येह बोतल इतने की है लेकिन वज़्न का कह कर भी इ़त्र बेचते हैं मसलन पहले "तोले" के ह़िसाब से इ़त्र बिकता था कि आधा तोला है मगर अब ग्राम के ह़िसाब से बिकता होगा मसलन येह पांच ग्राम की बोतल इतने की है ह़ालां कि उस से एक ग्राम निकल चुकी होती है, इसी त़रह़ बोतलों में भी मसाइल होते हैं कि बा'ज़ बोतलों के पेंदे मोटे होते जिस की वज्ह से उन में इ़त्र कम जाता है इस लिये वज़्न के बजाए येह कह कर इ़त्र बेचने में आ़फ़ियत है कि येह शीशी इतने की है।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/427)

अ़त्तार कैसे बना ?

सुवाल : आप को अ़त्तार क्यूं कहा जाता है नीज़ आप ने इ़त्र का काम कैसे शुरूअ़ किया ?[1]

जवाब : इस की एक वज्ह तो येह है कि मैं पहले इ़त्र बेचता था और मैं येह समझा कि शायद इ़त्र बेचने वाले को अ़त्तार कहते हैं इस लिये मैं ने अपना तख़ल्लुस अ़त्तार रख लिया। येह उस दौर की बात है जब दा'वते इस्लामी का वुजूद भी नहीं था, बा'द में पता चला कि देसी दवाएं बेचने वाले पन्सारी को अ़त्तार कहा जाता है। इस के इ़लावा मैं ने तज़्किरतुल औलिया किताब के मुसन्निफ़ "शैख़ फ़रीदुद्दीन अ़त्तार" का नाम पढ़ा तो वोह मुझे पसन्द आ गया इस लिये **अल्लाह** के एक वली की निस्बत से या

1... इस सुवाल का दूसरा ह़िस्सा शो'बए मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत की त़रफ़ से क़ाइम किया गया है जब कि जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का ही अ़त़ा फ़रमूदा है।

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ عَلَيْهِم के तज़्किरा निगार की निस्बत से मैं ने येह तख़ल्लुस अपना लिया। अब मुझे पता चला है कि अ़रब दुन्या में एक बहुत बड़ी फ़ेमिली है जिस का सरनेम (Surname) अ़त्तार है।

(दिलों की राह़त, 26 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1441 हि. मुत़ाबिक़ 19 एप्रिल 2020। अमीरे अहले सुन्नत की कहानी उन्ही की ज़बानी, क़िस्त़ : 17)

इ़त्र का कारोबार

इ़त्र के कारोबार की तरकीब यूं बनी कि जिन दिनों मैं नूर मस्जिद में इमामत करता था तो मैं ने सरकारे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बारगाह में इस सलाम के ग्यारह अश्आ़र अ़र्ज़ किये :

सुल्त़ाने औलिया को हमारा सलाम हो जीलां के पेश्वा को हमारा सलाम हो

फिर किसी त़रह़ तीस रुपै जम्अ़ कर के फ़्रेम में लगाने वाले एक हज़ार ख़ूब सूरत परचे छपवा कर मुफ़्त तक़्सीम किये और उस पर नूर मस्जिद का एड्रेस भी लिख दिया कि यहां से मुफ़्त ह़ासिल करें। एक रोज़ कहीं दूर से एक क्लीन शेव्ड नौ जवान एड्रेस पढ़ कर मेरे पास आया और मुझ से वोह परचा मांगा। मैं اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! शुरूअ़ से ही मिलन सार हूं और मेरी आ़दत थी कि कोई भी आ जाता तो उस से मह़ब्बत, मिलन सारी और ह़ुस्ने अख़्लाक़ से पेश आता था लिहाज़ा मैं ने उसे अपने ह़ुजरे में बिठा लिया। मेरा ह़ुजरा तक़रीबन एक चारपाई जितना छोटा सा कमरा था जो मुझे मस्जिद की त़रफ़ से मिला हुवा था, उस वक़्त येही कमरा मेरी कुल काएनात थी, उसी में मेरी किताबें रखी होती थीं और वहीं मैं अपने कपड़े धो कर रस्सियां बांध कर उन्हें सुखाता था। जब उस नौ जवान से मेरी बातचीत हुई तो उस ने बताया कि मेरी इ़त्र की होलसेल की दुकान है। उस ने इ़त्र की

एक बड़ी शीशी का तोहफ़ा भी ख़ुश हो कर मुझे पेश किया जो वोह अपने साथ लाया था। इत्र की दुकान का सुन कर मेरे मुंह में पानी आ गया कि येह तो इत्र वाला है और मुझे वैसे भी इत्र लगाने का बहुत शौक़ है। जब मैं ने उसे बताया कि मुझे इत्र का शौक़ है तो उस ने मुझे अपनी दुकान का एड्रेस दे दिया। येह नौ जवान मेमन थे और ग़ौसे पाक से बहुत अ़क़ीदत रखते थे। जब मैं ने उन की दुकान पर पहुंच कर उन से इत्र ख़रीदा तो पता चला कि होलसेल में इत्र बहुत सस्ता मिलता है क्यूं कि मैं रुपै दो रुपै में छोटी सी शीशी लिया करता था लेकिन उस ने इतने में बहुत बड़ी शीशी दे दी थी। चुनान्चे मैं ने उन से होलसेल में इत्र ख़रीदा और ख़ाली शीशियों में भर कर बेचा। उन दिनों मैं "मज्मूआ" बहुत शौक़ से लगाता था। फिर मोतिया, गुलाब, चम्बेली और मुख़्तलिफ़ वेरायटी के इत्र भी ख़रीदने शुरूअ़ किये और एक बेग में डाल कर फेरी लगा कर बेचने लगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मुझे अब भी इत्रियात का कुछ न कुछ तजरिबा है। (सिल्सिला : अमीरे अहले सुन्नत की कहानी उन्ही की ज़बानी, क़िस्त : 17। मदनी मुज़ाकरा नम्बर : 171)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से किये गए सुवालात और उन के जवाबात यहां ख़त्म हुए।

ख़ुश्बू की सुन्नतें और आदाब

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आइये ! ख़ुश्बू की सुन्नतें और आदाब के बारे में चन्द मदनी फूल सुनने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं। पहले एक फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिये : चार चीज़ें नबियों की सुन्नत में दाख़िल हैं : निकाह़, मिस्वाक, ह़या और ख़ुश्बू लगाना।

(مشکاۃ المصابیح، 1/88، حدیث:382) ❀ आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुश्बू का तोहफ़ा रद नहीं फ़रमाते। (सुन्नतें और आदाब, स. 85) ❀ नमाज़े जुमुआ के लिये ख़ुश्बू लगाना मुस्तहब है (बहारे शरीअ़त, 1/774, हिस्सा : 4 मुलख़्ख़सन) ❀ नमाज़ में रब से मुनाजात है तो इस के लिये ज़ीनत करना, इत्र लगाना मुस्तहब है। (नेकी की दा'वत, स. 207) ❀ आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमेशा उ़म्दा ख़ुश्बू इस्ति'माल करते और इसी की दूसरे लोगों को भी तल्क़ीन फ़रमाते। (सुन्नतें और आदाब, स. 83) ❀ ना ख़ुश गवार बू या'नी बदबू आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ना पसन्द फ़रमाते। (सुन्नतें और आदाब, स. 83) ❀ मर्दों को अपने लिबास पर ऐसी ख़ुश्बू इस्ति'माल करनी चाहिये जिस की ख़ुश्बू फैले मगर रंग के धब्बे वग़ैरा नज़र न आएं। (सुन्नतें और आदाब, स. 85) ❀ औ़रतों के लिये महक की मुमानअ़त इस सूरत में है जब कि वोह ख़ुश्बू अजनबी मर्दों तक पहुंचे, अगर वोह घर में इत्र लगाएं जिस की ख़ुश्बू ख़ावन्द या औलाद, मां बाप तक ही पहुंचे तो ह़रज नहीं। (सुन्नतें और आदाब, स. 85) ❀ इस्लामी बहनों को ऐसी ख़ुश्बू नहीं लगानी चाहिये जिस की ख़ुश्बू उड़ कर ग़ैर मर्दों तक पहुंच जाए। (सुन्नतें और आदाब, स. 86) ❀ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : औ़रत जब ख़ुश्बू लगा कर किसी मजलिस के पास से गुज़रती है तो वोह ऐसी और ऐसी है या'नी ज़ानिया है। (ترمذی، 4/361، حدیث:2795) ❀ सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दते करीमा थी कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم "मुश्क" सरे अक़्दस के मुक़द्दस बालों और दाढ़ी मुबारक में लगाते। (सुन्नतें और आदाब, स. 83) ❀ एयर फ्रेशनर के इस्ति'माल से इज्तिनाब करना चाहिये। (सुन्नतें और आदाब, स. 84)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

अगले हफ़्ते का रिसाला